Shodhankur Research Journal

Online Monthly September 2024 VOL -01 ISSUE-I

03

हिंदी ग़ज़ल में अभिव्यक्त विविध आयाम

डॉ जगदीश चव्हाण

हिंदी विभागाध्यक्ष,

दादासाहेब देविदास नामदेव भोळे महाविद्यालय, भुसावल जि. जळगाव

(महाराष्ट्र)

हिंदी ग़ज़ल के स्थापित हस्ताक्षर, राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त ऐसे अनेक ग़ज़लकार है, जो हिंदी ग़ज़ल काव्य के प्रति पूरी निष्ठा से आजीवन समर्पित रहे है। ग़ज़लकार दुष्यंतकुमार के बाद इन ग़ज़लकारों के नाम लिये जाते हैं। क्योंकि हिंदी ग़ज़ल की श्री वृध्दि में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इनकी ग़ज़लों में विषय की विविधता दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से आधुनिक युगबोध को वाणी प्रदान की है। जैसे कि इक्कीसवीं सदी की ग़ज़लों में वेदना, निराशा, नैतिकता बोध, आर्थिक बोध, धार्मिक बोध, आशावाद, मानवीय संवेदना, प्रेमबोध, तथा आदर्शवादी जीवन–बोध आदि विविध विषय दृष्टिगत होते है।

''ग़ज़ल में आदमी और जीवन से जुडे हुए विषयों का जितना विस्तार होता है, ग़ज़ल का शायर उतना ही परपिक्व, विवकेशील और विशिष्ट माना जाता है। जो समकालीन जीवन जीता हुआ आदमी हर कदम पर हमारे साथ चलता है, उससे हम मिलते तो रहते है लेकिन हमारी सोच के साथ कभी इसकी भीतर तहों तक नहीं पहुँच पाती है।''1 इस प्रकार कहा जा सकता है कि लड़ाई, विड़म्बनाओं एवं त्रासदियों की व्यंग्यात्मकता अनुभूति ने हिंदी ग़ज़ल को नवीन स्वर प्रदान किया है, जिसके माध्यम से नवीन मूल्यों की प्रतिस्थापना हो सकी है। ग़ज़ल किसी भी भाषा शैली मे लिखी जा रही हो उसका व्याकरणगत जो फारशी छंद विधान से ही जुड़कर है। उससे अलग रहकर ग़ज़ल के प्रति और कुछ सोचना उसके छंद विधान के प्रति न्याय नहीं होगा और यही रचनाधर्मिता की सबसे बड़ी पहचान है कि दूसरे काव्य–विधा के सारे व्याकरणसम्मत नियम को अपनी अभिव्यक्ति में अपनाते है। इस प्रकार देश में हिंदी ग़ज़ल ने अपना एक बहुत बड़ा पाठक वर्ग तैयार किया है।

वैसे भी हर विधा का अपने वक्त, अपने समाज, जमीन तथा लोगों से रिश्ता जुड़ा होता है। जमीन से जुड़ी रचना ही जिंदा रहती है और अपना प्रभाव डालती है। ग़ज़ल तो कविता कहानी से भी जादा जुड़ी है– लोगों से , समाज से, देश से। अतः हिंदी ग़ज़ल सीधे–सीधे देश और समाज में फैली कुरितियों और विसंगतियों पर उँगली रखती है–

जीवन कठीन सवाल, हमारी बस्ती का,
हर सपना कंगाल, हमारी बस्ती का।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि ग़ज़ल और जीवन का अनुवंशिक रिश्ता है।

हिंदी के ग़ज़लकार ग़ज़ल की पांरपारिक पध्दती का निर्वाह करते हुए इसे नये तेवर और ताजगी प्रदान कर रहे है इसलिए हिंदी ग़ज़ल का भविष्य उज्ज्वल है जैस–

अमरता का यूँ ही भरम–सा हुआ था,
मेरा नाम पानी पे लिक्खा हुआ था। 2

हिंदी ग़ज़लकारों ने अपन ग़ज़लों में नारी जीवन का चित्रण बखूबी तथा यथावत रूप से किया है। आज स्त्री की स्थिति में परिवर्तन आया है। लेकिन तब भी भारतीय नारी आज भी सामाजिक दृष्टि से पिछड़ी नजर आ रही है। आज भी वह शोषित है। नारी की अनेक समस्याओं को ग़ज़लकार जहीर कुरेशी ने इस प्रकार का मार्मिक चित्रण किया है–

क्या कहे अखबार वालों से व्यथा औरत,
यौन शोषण की युगों लंबी कथा औरत।
टपहरण कर ले गये 'रावण' कभी 'बिल्ला'

©Copyright 2024 SSMRJ. All Rights Reserved

कल 'सिमा' तो आज 'गीता चोपड़ा' औरत,
एक कवि ही था, कहा जिसने उसे 'श्रध्दा'
आम मर्दो ने सदा ली अन्यथा औरत। 3

स्पष्ट है कि छायावाद के कवि जयशंकर प्रसादजी ने स्त्री को उँचा स्थान दिया था, उसे 'श्रध्दा' कहा था, तो दूसरी ओर अन्य कवि इसी औरत को निम्न स्थान देकर उसका शोषण करने के लिए तुले हुए थे। उसी प्रकार इक्कीसवीं सदी में स्त्री भ्रूण हत्या, यौन शोषण व बलात्कार को बडावा मिल रहा है। आज नारी की जीवन अत्यंत दयनीय अवस्था में है, इसलिए नारी सशक्त नहीं हो पा रही है। अतः आज के वर्तमान समय में नारी को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है उन्हें ने ग़ज़लकारों ने अपनी लेखनी के द्वारा अभिव्यक्त किया है।

दिन–प्रतिदिन समाज में होनेवाले परिवर्तनों को हिंदी ग़ज़लकारों ने देखा, भोग और परखा है। बदलती सामाजिक परिस्थितियों पर उन्होंने ग़ज़लों में हमें बाजारबाद, भूमंडलीकरण, नारी विमर्श, गरीबी भूखमरी, भ्रष्ट्राचार, बदलते जीवनमूल्य, सर्वहार वर्ग की स्थिति, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, महानगरीय बोध आदि अनेक बातों दृष्टिगोचर होती है। यही चित्रण जहीर कुरेशी अपनी ग़ज़लों में प्रभावी ढंग से किया है। यथा–

उसे मरने से पहले थी जरूरत,
मरण के बाद, लाखों दान आया। 4

आम आदमी की जिन्दगी और उससे जुड़ी समस्याओं का चित्रण ज्ञानप्रकाश विवके ने भी अत्यंत सजीवता से किया है। भूख के कारण उसकी क्या स्थिति होती है, इसे इन्होंने बखूबी व्यक्त किया है। भूख की समस्या अत्यंत भयावह समस्या बन चूकी है। अभाव के कारण रोटी के लिए लोग कुत्तों की तरह टूट पडते है। खाने के लिए कुछ न होने पर व्यक्ति जानवर की तरह व्यवहार करने लगता है। इसी बात को अभिव्यक्त करते हुए कुँवर बेचैन कहते है–

जिसको भी देखिए भूखे की तरह टूट पड़ा,
धूप का टूकड़ा भी रोटी–सी लगा सर्दी में
अपने घुँटने में छुपाया तो बहुत सर उसने
उसका तन हो न सका उसका सगा सर्दी में। 5

अतः यह निर्विवाद सत्य है कि हिंदी ग़ज़ल जन्म से ही रोटी और संघर्ष से जुड़ी रही या यूँ कहें कि वर्मतान हिंदी ग़ज़ल का जन्म ही संघर्षो के बीच में हुआ। इसलिए हिंदी ग़ज़ल का भविश्य बेहद विकासात्मक एवं सुखद है ऐसा कहा जा सकता है।

ग़ज़लकार गिरीराजशरण अग्रवाल ने अपनी ग़ज़लों में सांप्रदायिकता का वास्तविक चित्रण किया है। वे कहते है कि हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि धर्मो की अपेक्षा इंसानियत के धर्म की स्थापना करना, जो सभी धर्मो से भी अलग है, उसकी पूजा अर्थात मानवप्राणी सेवा करना जो अन्य धार्मिक पूजा से अलग है। ग़ज़लकार विज्ञानव्रत भी इसी बात को प्रतीकात्मक से बताते हुए कहते है कि अब ऐसा घर बनाओं जिसमें सारा जमाना एक साथ रहे अर्थात धर्मनिरपेक्ष समाज की स्थापना। ग़ज़लकार के शब्दों में–

धर्म मेरा अगर है तो इंसानियत,
मेरी अंदर अलग, मेरी पूजा अलग।
इसमें रह ले एक जमाना,
अबके ऐसा घर बनवाना। 6

स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी ग़ज़ल साहित्य में भारतीय समाज भी भयावह समस्या सांप्रदायिकता पर तत्कालीन ग़ज़लकारों ने विस्तृत चर्चा की है।

समाज में फरेब और मक्कारी इस प्रकार व्याप्त हो चूकी है कि शिकारी तिलक लगाकर पुजारी बन बैठा है एवं मदारी की तरह दूसरे लोगों को जमूरा बनाकर सिक्के बटोरा रहा है। दूसरों को अपने आदेश पर नचाकर स्वार्थ साधन करने की प्रवृत्ति उन्हीं लोगों में होती है जो कपटी है, धोखेबाज है, स्वार्थ है। ज्ञानप्रकाश विवके केवल मनुष्य के प्रति संवेदनशील नहीं कैदी प्राणियों के प्रति भी संवेदनशील है, जो जमूरे के इशारे पर नाचते है। उन्हीं के शब्दों में –

वे कल जो शहर में आया शिकारियों की तरह
तिलक लगाके खड़ा है पुजारियों की तरह
फरेबकार जमूरा बनाके औरों को
बटोरते रहे सिक्के मदारियों की तरह। 7

इस प्रकार सामाजिक मूल्यों के विघटन से ग़ज़लकार व्यथित एवं चिंतित है यह स्पष्ट हो जाता है। यह विघटन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् दिन–प्रतिदिन बढता ही गया। यही कारण है कि इक्कीसवीं सदी तक व्यष्टि एवं समष्टि जीवन में सामाजिक मूल्यों के प्रति कोई आस्था नहीं रही। लेकिन ज्ञानप्रकाश विवके जैसे संवेदनशील साहित्यकार सामाजिक मूल्यों के पतन पर व्यथित होकर सच्चाई बयान करते है।

ऐसे अनेक ग़ज़लकार है जिन्होंने इक्कीसवी सदी तक आते–आते नारी जीवन के साथ –साथ छोटी–छोटी कन्याओं तथा बेटियों का महत्त्व अपनी ग़ज़लों में व्यक्त किया है। समाज के सभी स्त्री और पुरूषों ने यह नहीं भूलना चाहिए कि बेटियाँ कितनी महत्त्वपूर्ण होती है। बेटी शुभ माना जाता है। वह दो खानदानों को जोड़ने का जरिया होती है। वह हमारे पुण्यों का फल होती है। वह गीता और कुराण की तरह तथा पानी की तरह पवित्र होती है। इसलिए समाज में उसका यथोचित सम्मान होना जरूरी है। बेटियों के संदर्भ में विचार व्यक्त करते हुए शिवकुमार अर्चन लिखते हैं–

अपने पुण्यों का सुफल हैं, ये हमारी बेटियाँ,
आँसूओं का गुणनफल हैं, ये हमारी बेटियाँ,
श्लोक गीता के ऋचाएँ वेद की ,कुरआन हैं,
एक पाकीज़ा ग़ज़ल है ये हमारी बेटियाँ। 8

इस प्रकार तमाम बातों का चित्रण इस काल की ग़ज़लों में परिलक्षित होता है।

उपर्युक्त बातों के साथ–साथ इक्कीसवीं सदी के हिंदी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से व्यंग्यात्मक रूप से राजनीति को एक नई वाणी प्रदान की है। क्योंकि आज लोकतंत्र केवल कहने मात्र को लोकतंत्र रह गया है। इसकी गरिमा, उसका महत्त्व खत्म हो गया है। संसद का स्थान लोकतांत्रिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण होता हैं आज संसद लोक प्रतिनिधियों के लिए आखाड़ा बनकर रह गई है, संसद में जनता के प्रश्नों को सुलझाने की बजाय वहाँ पर गाली–गलोज, मार–पीठ, शोरगुल ने स्थान ले लिया है। इसका यथोचित चित्रण ग़ज़लकार ने इस प्रकार किया है–

वह संसद आज की तहजीब में संसद नहीं जिसमें,
न चप्पल है, न जूता है, न थप्पड़ है, न गाली है।

आज की राजनीतिक, विद्रूपताओं एवं विडंम्बनाओं का सही–सही चित्रण करते हुए डॉ. प्रतिमा सक्सेना लिखती है– '' आज की राजनीति वास्तव में एक वेश्या है, जिसका न कोई ईमान है न धरम। स्वार्थ और पैसा ही उसका सबकुछ है, कुर्सी ही उसका सबकुछ है। कुर्सी ही इसका ईमान और धर्म है। कुर्सी पाने के लिए कुछ भी किया जा सकता है। अपने धर्म, अपनी संस्कृति, अपने देश, अपने राष्ट्र, किसी को भी दाँव पर लगाया जा सकता है ..... इन तरीकों से राजनीतिक मूल्यों का और भी –हास हुआ है।'' 9 इस प्रकार हिंदी के ग़जलकारों ने वर्तमान राजनीति का सूक्ष्म निरिक्षण कर उसकी खामियों को समझाा और वर्तमान राजनीति की विसंगतियों पर प्रहार भी किया है। हिंदी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में राजनीति के विविध आयामों का चित्रण कर सरकार एवं जनता के सम्मुख राजनीति की वास्तविकता को पेश किया है। और उसमें कुछ बदलाव करने का भरकस प्रयास किया है।

स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि हिंदी की अन्य विधाओं की तरह ग़ज़ल का क्षेत्र भी अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत है। वह उर्दू ग़ज़ल की भाँति सीमित दायरे में सिमट कर नहीं रहा। जीवन और समाज की प्रत्येक विसंगतियों के अतिरिक्त हिंदी ग़ज़लों में अभिव्यक्ति मिलती है। वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक विसंगतियों के अतिरिक्त हिंदी ग़ज़लकारों ने जीवन के विविध आयामों पर भी पैनी कलम चलाई हैं। डॉ. रतनकुमार पांण्डेय जी

ने ग़ज़ल के संदर्भ में अपना मत व्यक्त करते हुए लिखा है–''ग़ज़ल कष्टकर मानसिकता से जुड़ी विधा है। वह जितना मुलायम है, उतना ही कठोर भी है। ग़ज़ल में ऐसा कथन आ गया है कि वह कलेजे को बींधता हुआ चला जाता है। इसलिए मेरी स्पष्ट मान्यता है कि हिंदी ग़ज़ल की संभावनाएँ अनंत है। अमीर खुसरों से प्रारंभ उसकी जीवन रेखा असित है । वस्तु चेतना की दृष्टि से उसकी सीमा रेखा का एक छोर उर्दू–फारसी ग़ज़ल के प्रेम सौंदर्य तक जाता है, तो दूसरा छोटा वर्तमान की कड़वी सच्चाई तथा समसामायिक जीवन की अनेकानेक भयावह और कुरूप असंगतियों तथा विसंगतियों तक जाता है।''[10]

दुष्यंत कुमार से लेकर इक्कीसवीं सदी के ग़ज़लकार ने अपनी ग़ज़लों में जो वेदना एवं पीड़ा की अभिव्यक्ति की है वह आज भी उतनी ही प्रासंगिक लगती है। क्योंकि दुष्यंत के समय का जो वातवरण था, वह आज भी वैसी ही दिखाई देता है। इसमें किसी भी प्रकार परिवर्तन नहीं हुआ है। इस समय की जो वेदनानुभूति थी वह आज भी वैसी ही है। इसलिए हम दुष्यंत को बार–बार याद करते है क्योंकि–

मेरे गीत तुम्हारे पास सहारा पाने आएँगे,
मेरे बाद तुम्हें ये मेरी याद दिलाने आएँगे। [11]

अतः दुष्यंत की ग़ज़लों का एक–एक शब्द उनके हदय की पीड़ा को अभिव्यक्त करता है। इक्कीसवीं सदी के हिंदी ग़ज़लकारों ने इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति अपनी ग़ज़लों में की है। निष्कर्षत : कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी के हिंदी ग़ज़लकारों ने बड़ी व्यापकता और गहनता के साथ विविध विमर्श को अभिव्यक्त किया है। मूल्यों का विघटन, टूटती मान्यताओं, भ्रष्टाचार, महानगरीय, विद्रुपताओं, नारी शोषण, भय का वातावरण, आतंकवाद और अलगाववाद की समस्या, नई सभ्यता और फैशन, आम आदमी की पीड़ा तथा समाज की बिघड़ती हुई स्थिति का अपनी ग़ज़लों के माध्यम से यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया है।

संदर्भ

1. अनुराग सरिता, डॉ विनय चौधरी अंक 03, अक्तूबर–दिसम्बर 2011 पृ.05
2. हिंदी ग़ज़ल : ग़ज़लकारों की नजर में, सरदार मुजावर पृ. 82
3. चाँदनी का दुःख – जहीर कुरेशी पृ. 68
4. नव–निकष (शोध विशेषांक–4) अंक 06 दिसम्बर 2012, डॉ. लक्ष्मीकांत पांण्डेय पृ. 74
5. वही पृ. 75
6. उत्तर शती का हिंदी साहित्य : समाज और संवेदना, डॉ संजय रणखांबे पृ. 83
7. वही पृ. 74
8. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य और नारी पृ.108
9. हिंदी ग़ज़ल और ग़ज़लकार, डॉ मधु खराटे पृ.02
10. वही मुखपृष्ट
11. साये में धूप, दुष्यंतकुमार पृ. 35